आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

डॉ.जशाभाई पटेल

भारतीय आर्यभाषाओं को काल की दृष्टि से तीन वर्गों में विभक्त किया जाता है।

(क) प्राचीन भारतीय आर्य-भाषा (प्रा0भा0आ0भा0 काल) – 1500 ई0 पूर्व से 500 ई0 पूर्व तक।
(ख) मध्य भारतीय आर्य-भाषा (म0भा0आ0भा0 काल) – 500 ई0 पूर्व से 1000 ई0 तक।
(ग) आधुनिक भारतीय आर्य-भाषा (आ0भा0आ0भा0 काल) – 1000 ई0 से वर्तमान समय तक।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

डॉ.जशाभाई पटेल

- डॉ.धीरेन्द्र वर्मा ने एक हजार ईस्वी से आज तक का समय माना है।वर्तमान आ.भा.आर्य भाषाओं का साहित्य में 13वीं शताब्दी ई.के बाद ,तबतक व्यवहार की भाषा विविध अपभ्रंश। लेकिन आविर्भाव 10वीं शताब्दी ई. के लगभग।
- वैदिक ≥ पाली ≥ प्राकृत ≥ अपभ्रंश ≥ आ.भा.आर्यभाषाएँ (हिन्दी,बंगला,गुजराती,मराठी...आदी)

वर्गीकरण-सबसे पहला हार्नल ने बाहरी और भीतरी शाखा कहा। इसी आघार पर ग्रियर्सन-तीन उप शाखा (क)बहिरंग उपशाखा (ख)मघ्य उपशाखा (ग)अन्तरंग उपशाखा

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

डॉ.जशाभाई पटेल

डॉ.चटर्जी का वर्गीकरण

(क)उदीच्य-

1.सिन्धी, 2.लहंदा,3.पूर्वी पंजाबी।

(ख)प्रतीच्य –

1.गुजराती, 2.राजस्थानी।

(ग)मध्यदेशीय- 1.पश्चिमी हिंदी।

(घ)प्राच्य-

1.पूर्वी हिंदी,2.बंगाली,3.बिहारी,4.उडिया,5.असमिया।

(ङ)दक्षिणात्य-

1.मराठी।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

डॉ.जशाभाई पटेल

1.सिन्धीः

- -मूलतः सिन्ध प्रदेश की भाषा,
- प्राचीनतम संकेत भरत के नाट्यशास्त्र
- 14वीं सदी से नियमित रूप से साहित्य मिलने लगा
- शाहजो रिशालो सबसे अधिक प्रसिद्ध रचना
- प्रसिद्ध कवियों में अब्दुल करीम,शाह लतीफ,सचल, और सामी है।
- विचोली,सिराइकी,थरेली,लासी,कच्छी प्रमुख बोलियाँ
- फारसी लिपि का प्रयोग,अपनी प्राचीन लिपि लण्डा है
- भारत में गुरुमुखी,अब नागरी लिपि का प्रयोग

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ
डॉ.जशाभाई पटेल

2.पंजाबी:-फ़ारसी में अर्थ होता है पाँच नदियों का देश(पंज+आब) सतलुज,रावी,व्यास,चेनाब,और झेलम।

- पंजाब क्षेत्र होने के कारण पंजाबी नाम।पूर्वी पंजाब(दिल्ली की ओर का हिंदी तथा उत्तर में पहाड़ी क्षेत्र को छोड़कर) तथा पाकिस्तान-स्थित पंजाब(कुछ भाग छोड़कर)
- बोलने वालों में सिक्खों के कारण इसे सिक्खी,
- कभी-कभी लहँदा और पंजाबी को दोनों को पंजाबी।
- 1921 की जनगणना के आधार पर बोलने वालो की संख्या 16,233,596 थी।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

डॉ.जशाभाई पटेल

आ.भा.आर्य भाषाओं में सबसे अधिक पुरानी भाषा।

- सहज ग्रामीण आकर्षण, संस्कृत तथा फ़ारसी से मुक्त
- शुद्धतम रूप अमृतसर के आसपास माझ में जिससे माझी भी कहते हैं
- टाकरी,महाजनी,गुरुमुखी,फ़ारसी,नागरी आदि लिपिओं का प्रयोग आज भारत में गुरुमुखी और पाकिस्तान में उर्दूसाहित्य में प्रथम कवि बाबा फ़रीद शकरगंज हैं।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ
डॉ.जशाभाई पटेल

नानक,अर्जुनदेव,गुरुदास तथा हीर-राँझा के लेखक वारिस शाह

- आधुनिक लेखकों में मोहनसिंह,अमृता प्रीतम प्रमुख।
- लोकसाहित्य की दृष्टि से पर्याप्त सम्पन्न।
- कुछ पैशाची या केकय तो कुछ टक्क तो
- कुछ विद्वानों ने शौरसेनी अपभ्रंश से मानते हैं।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ

डॉ.जशाभाई पटेल

लहँदा:- शाब्दिक अर्थ-पश्चिम,सूर्यास्त इसी आधार पर इसे पश्चिमी भी कहता है।प्रचीन काल में मुल्तानी भी कहते थे।

- पश्चिमी पंजाब आज पाकिस्तान में है।
- हिन्दुओं के कारण इसे हिन्दको,जाट के कारण जटकी तथा उच कस्बे कारण उच्ची भी कहते हैं।
- ग्रियर्सन के भाषा सर्वक्षण के अनुसार बोलनेवालो की संख्या 70,92,781थी।
- लहँदा पर सिन्धी तथा कश्मीरी का प्रभाव।
- लहँदा बोलने वाले अधिक मुसलमान होने के कारण फ़ारसी लिपि,हिन्दु लोग लंडा नामक अब उर्दू
- केकय या पैशाची अपभ्रंश से संम्बन्ध से है।

आधुनिक भारतीय आर्य भाषाएँ
डॉ.जशाभाई पटेल

- **गुजरातीः-**
- गुजरात की भाषा और गुजरात का सम्बन्ध गुर्जर जाति से जो मुलतः शक थें। पहले पंजाब एवं राजस्थान में।मुसलमानों के आक्रमण के पश्चात गुजरात में त्राण मिला।
- गुजराती भाषा का प्रथम प्रयोग प्रेमानंद(1641-1714) ने किया।
- गुजराती का सम्बन्ध शौरसेनी अपभ्रंश के दक्षिणी-पश्चिमी रूप से,जिसे उमाशंकर जोशी ने मारू गुर्जर तथा कनैयालाल मुंशी गुर्जर अपभ्रंश कहत हैं। इसे नागर अपभ्रंश भी कहते हैं।